टिप्पणी

1

राग यमन (ख्याल)

भूमिका

हिन्दुस्तानी संगीत कोर्स के थ्योरी अनुभाग के अंतर्गत पहले बताये गये विभिन्न विषय जैसे– राग, ताल, इनके तत्व, स्वर लिपि पद्धति इत्यादि का वर्णन अब प्रैक्टिकल अनुभाग में किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में दिये गये रागों का आगे के पाठों में बंदिशों के उदाहरणों के माध्यम से एवं उनकी स्वरलिपि का वर्णन शास्त्रीय संगीतकी ख्याल शैली के संदर्भ में आलाप तथा तान सहित एवं ध्रुपद शैली के संदर्भ में दुगुन, तिगुन इत्यादि सहित किया जा रहा है। इन्हीं बंदिशों के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दिये गये सी.डी. को सुनें।

राग यमन 'कल्याण' ठाठ से उत्पन्न राग है। यह एक अत्यंत प्रचलित राग है, जिसमें मध्यम तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध एक ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप एवं तान सहित दी जा रही है।

थाट–कल्याण

गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर

वादी–गंधार

संवादी – निषाद

जाति – (सम्पूर्ण–सम्पूर्ण)

सारे स्वर शुद्ध/, मध्यम तीव्र

आरोह – सा रे ग मं॑ प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प मं॑ ग रे सा

पकड़ – नि़ रे ग रे, सा, प मं॑ ग, रे, सा

आरोह गाते समय निषाद से प्रारम्भ किया जाता है तथा पंचम वर्जित रखा जाता है।

टिप्पणी

बंदिश

स्थायी

सदा शिव भजमन निस दिन
रिध सिध दायक विनत सहायक
नाहक भटकत फिरत अनवरत।

अंतरा

शंकर भोला पार्वती रमना,
सीत तपोनग भूषण अनुपम,
काहे ना सुमिरत भटकत तू फिरत।।

राग यमन - त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

		नि ध – प	म॑ प ग म॑
		स दा ऽ शि	व भ ज म
		0	3
प – – –	प म॑ ग रे	नि॒ रे ग रे	ग म॑ प ध
न ऽ ऽ ऽ	नि स दि न	रि ध सि ध	दा ऽ य क
X	2	0	3
प म॑ ग रे	ग रे सा ऽ	नि॒ रे ग म॑	प ध नि सां
वि न त स	हा ऽ य क	ना ऽ ह क	भ ट क त
X	2	0	3
रें सां नि ध	प म॑ ग म॑		
फ़ि र त अ	न व र त		
X	2		

अंतरा

		म॑ ग म॑ घ	सां – सां सां
		शं ऽ क र	भो ऽ ला ऽ
		0	3

टिप्पणी

नि	रें	गं	रें	सां	नि	–	प	गं	ऽ	रें	सां	रें	–	सां	नि
पा	ऽ	र्व	ती	र	म	ना	–	सि	–	त	त	पो	–	न	ग
X				2				0				3			
ध	–	प	म॑	ग	ऽ	रे	सा	नि़	रे	ग	म॑	प	ध	नी	सां
भु	ऽ	ष	ण	अ	नु	प	म	का	ऽ	हे	ना	सु	मि	र	त
X				2				0				3			
रें	सां	नि	ध	प	म॑	ग	म॑								
भ	ट	क	त	तू	फि	र	त								
X				2											

अलाप स्थायी

सदाशिव भज मन निस दिन

	0				3				X				2			
1.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	नि़	रे	सा	–
2.	नि़	–	रे	–	ग	–	–	–	म॑	–	रे	–	ग	–	–	–
	म॑	–	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
3.	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	म॑	–	–	–	ग	–	–	–
	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	रे	–	–	–	सा	–	–	–
4.	नि़	रे	ग	म॑	प	–	–	–	म॑	–	ध	–	प	–	–	–
	प	म॑	ग	–	रे	–	–	–	नि़	–	रे	–	सा	–	–	–
5.	ग	–	म॑	–	प	–	–	–	म॑	ध	नी	ध	प	–	–	–
	म॑	–	ध	–	–	नि	–	–	म॑	ध	नी	ध	सां	–	–	–

अंतरा

शंकर ..... रमना

	O				3				x				2			
1.	म॑	–	ध	–	नि	–	–	–	म॑	ध	नी	ध	सां	–	–	–
2.	नि	–	रें	–	गं	–	–	–	गं	–	रें	–	नि	रें	सां	–

तानें

स्थायी

सदाशिव भज मन

	x				2			
(i)	नि़रे	गम॑	पध	निसां	निध	पम॑	गरे	साऽ

(ii)	नि़रे	गमं	पध	निसां	पमं	गरे	गरे	साऽ
(iii)	पध	निसां	निध	पमं	पध	पमं	गरे	साऽ
(iv)	सांनी	धप	निध	पमं	पध	पमं	गरे	साऽ
(v)	गग	रेसा	नीनी	धप	सांनी	धप	मंग	रेसा

अंतरा

शंकर भोला

	x				2			
(i)	सांनी	धप	गमं	रेसा	नि़रे	गमं	पध	निसां
(ii)	नि़रे	गमं	रेग	मंध	गमं	धनी	मंध	नीसां

2

राग भैरव (ख्याल)

भूमिका

यह राग भैरव ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इस आधार पर, रिषभ तथा धैवत स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की एक बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. देखें।

राग परिचय

ठाठ– भैरव

गायन समय– प्रात:काल

वादी स्वर– धैवत

संवादी स्वर– रिषभ

जाति– सम्पूर्ण-सम्पूर्ण

रिषभ एवं धैवत कोमल, बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं।

न्यास स्वर– मध्यम, मुख्य स्वर समूह गम रे सा।

आरोह	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	नि	सां।
अवरोह	–	सां	नि	ध	प	म,	ग	रे,	सा।
पकड़	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	प।	

राग भैरव

बंदिश

स्थायी:

धन-धन मूरत कृष्ण मुरारी
सुलच्छन गिरिधारी छवि सुंदर लागे अति प्यारी

अंतरा:

बंसीधर मनमोहन सुहावे
बलि-बलि जाऊँ मोरे मन भावे
सब रंग ज्ञान विचारी।।

टिप्पणी

भैरव स्वरलिपि:

स्थायी

म		नि				ग		ग				ग			
ग	म	ध॒	ध॒	पम	प	म	ग	रे॒	–	मग	(म)	रे॒	–	सा	–
ध	न	ध	न	मूऽ	ऽ	र	त	कृ	ऽ	ष्णाऽ	मु	रा	ऽ	री	–
0				3				X				2			

नि़	नि़							ग				सा		म	
सा	ध़॒	–	नि़	सा	सा	सा	सा	रे॒	–	सा	–	नि़	सा	ग	म
सु	ल	ऽ	च्छ	ऽ	न	गि	रि	धा	ऽ	री	ऽ	छ	बि	सुं	ऽ
0				3				X				2			

		नि		ध॒		नि									
प	प	ध॒	–	सां	–	ध॒	प	पध॒	निसां	सारें॒	सांनि	ध॒नि	ध॒प	मग	म
द	र	ला	ऽ	गे	ऽ	अ	ति	प्याऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

अंतरा

म				नि											
प	–	प	–	ध॒	ध॒	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	–
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न	मो	ह	न	सु	हा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			

सां		रें॒						नि				नि			
रें॒	रें॒	मं	मं	रें॒	–	सां	–	सां	सां	रें॒	सां	ध॒	–	प	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊँ	ऽ	मो	रे	म	न	भा	ऽ	वे	ऽ
0				3				X				2			

म						नि									
ग	म	ग	म	प	–	ध॒	प	पध॒	निसां	सारें॒	सांनि	ध॒नि	धप	मग	म
स	ब	रं	ग	ज्ञा	ऽ	न	वि	चाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री
0				3				X				2			

टिप्पणी

आलाप

धन धन मूरत कृष्ण मुरारी

	0				3				X				2			
1.	सा	–	–	–	ध	नि़	सा	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
2.	सा	ग	म	–	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
3.	ग	म	ध	–	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
4.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	–	–	प	–	–	–
	ग	म	प	ध	प	–	–	–	ग	–	म	–	रे	–	सा	–
5.	ग	म	प	ध	नि	–	–	–	ध	–	नी	–	सां	–	–	–

अंतरा

बंसीधर मन मोहन सुहावे

(i)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	म	प	ध	नि	सां	–	–	–
(ii)	ध	–	नि	–	सां	–	–	–	गं	–	मं	–	रें	–	सां	–
	0				3				X				2			

स्थायी तान

	x				2			
(i)	सारे	गम	पध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ
(ii)	गम	पध	निसां	रेंसां	निध	पम	गरे	साऽ
(iii)	सारे	गम	पम	गम	पध	पम	गरे	साऽ
(iv)	साग	मप	गम	पध	निनि	धप	मग	रेसा
(v)	धनि	सारें	सांनि	धप	गम	धप	मग	रेसा

अंतरा

	x							2				
(i)	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	सा	ग	म	प	धनि	सांऽ
(ii)	धनि		सारें		सांनि		धप		म	ग	म	प	धनि	सांऽ

टिप्पणी

3

राग : भूपाली (ख्याल)

भूमिका

राग भूपाली कल्याण ठाठ से उत्पन्न हुआ है। यह बहुत ही आसान एवं मधुर राग है, जिसके आरोह तथा अवरोह दोनों में पांच स्वर हैं। अर्थात्, मध्यम तथा निषाद स्वर वर्जित हैं। अतः, इसकी जाति औड़व-औड़व है। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् तीन ताल में छोटा ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. देखें।

राग परिचय

ठाठ - कल्याण

वादी स्वर - गंधार

सम्वादी स्वर - धैवत

गायन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

जाति - औड़व-औड़व

राग भूपाली के वर्जित स्वर - मध्यम एवं निषाद

आरोह - सा रे ग, प ध, सां

अवरोह - सां ध प ग रे सा

पकड़ - ग, रे, सा, ध़, सा रे, ग, प ग, ध प ग, रे सा

बंदिश

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

त्रिभुवन नायक बहुसुख दायक

बिलम करो मत हाली

टिप्पणी

अंतरा

अति उदार गत अगम निगम के
रसिकन के रस ख्याली
सिरि कमलापति बृज के वासी
कर खुशाल प्रतिपाली

राग भूपाली-छोटा ख्याल (तीनताल)

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–	सा	ध़	सा	रे	ग	–	ग	–
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ	त्रि	भु	व	न	पा	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			
प	प	प		प		सां		ध				ध	सां		
ग	ग	ग	रे	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां
त्रि	भु	व	न	ना	ऽ	य	क	ब	हु	सु	ख	दा	ऽ	य	क
0				3				x				2			
ध				रें											
सां	सां	रें	रें	ध	–	सां	सां	पध	सारें	गरें	सांसां	पध	सांसां	धप	गरे
बि	ल	म	क	रो	ऽ	म	त	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			
रे															
सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	–								
द	र	श	न	दी	ऽ	जे	ऽ								
0				3											

अन्तरा

ग					ध										
प	प	ग	प	–	प	सां	ध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–
अ	ति	उ	दा	ऽ	र	ग	त	अ	ग	म	नि	ग	म	के	ऽ
0				3				x				2			
ध	सां							ध				ध			
सां	सां	ध	ध	सां	–	रें	रें	सां	रें	गं	रें	सां	रें	सां	ध
र	सि	क	न	के	ऽ	र	स	ख्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ली	ऽ
0				3				x				2			

ध		ध		सां				प		प		ग			
प	ध	सां	सां	ध	–	प	प	ग	रे	ग	प	रे	–	सा	–
सि	रि	क	म	ला	ऽ	प	ति	बृ	ज	के	ऽ	वा	ऽ	सी	ऽ
0				3				x				2			
ध		गं													
सां	सां	गं	रें	–	सां	रें	सां	पध	सांसां	धप	पध	सांसां	धप	गरे	सा–
क	र	खु	शा	ऽ	ल	प्र	ति	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	लीऽ
0				3				x				2			

आलाप

स्थायी

दरशन दीजे त्रिभुवन पाली

	0				3				x				2			
1.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	ग	–	रे	–	सा	ध़	सा	–
2.	सा	–	रे	–	ग	–	–	–	प	–	–	–	ग	–	–	–
	प	–	ग	–	रे	–	–	–	सा	–	ध़	–	सा	–	–	–
3.	ग	रे	प	–	ग	–	–	–	ध	प	ग	रे	ग	–	सा	–
4.	ग	रे	ग	–	प	–	–	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

अन्तरा

अति उदार गत अगम निगम के

0				3				x				2			
सा	–	–	–	सांध	–	सां	–	ग	प	ध	–	सां	–	–	–

तान

स्थायी

दरशन दीजे

	x				2			
1.	सारे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
2.	सारे	गप	धसां	रेंसं	धप	गरे	गरे	सा–
3.	सारे	गरे	गप	गप	धसां	धप	गरे	सा–
4.	गरे	गप	धसां	धप	गप	धप	गरे	सा–
5.	सारे	गप	धसां	रेंसां	रेंसां	धप	गरे	सा–

टिप्पणी

4

राग अल्हैया बिलावल

भूमिका

यह राग बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में कोमल निषाद तथा गंधार का वक्र प्रयोग है। इस राग का सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है। जिसके पश्चात् तीन ताल में बद्ध ख्याल की बंदिश की संपूर्ण स्वर लिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में दीये गये सी.डी. को देखें।

राग परिचय

आरोह – सा रे, ग रे, ग प ध, नि ध नि सां

अवरोह – सा नि ध प, ध नि ध प, म ग म रे सा

पकड़ – ग रे, ग प, ध, नि सां

ठाठ – बिलावल

वादी – धैवत

संवादी – गांधार

जाति – षाड़व संपूर्ण

गायन समय – दिन का द्वितीय प्रहर

बंदिश

स्थायी

बलि बलि जाऊ मधुर सुर गाओ अबकि बेर मेरे
कुंवर कन्हैया नदं हि नाच दिखावो

अन्तरा

तारी दे दे अपने कर की परम प्रीत उपजावो
आन जौन्त धुन सुन डर पट कत मो भुज कंठ लगावो

टिप्पणी

अल्हैयाबिलावल-त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
प		सां		प				म				म			
सां	सां	ध	प	ग	प	म	ग	रे	गम	प	मग	रे	–	सा	–
ब	लि	ब	लि	जा	ऽ	ऊं	म	धु	रऽ	सु	रऽ	गा	ऽ	वो	ऽ
0				3				x				2			
नि								सा				सा			
सा	रे	ग	म	रे	सा	रे	सा	ध़	नि़	सा	नि़	ध़	नि़	ध़	प़
अ	ब	कि	बे	ऽ	र	मे	रे	कुं	व	र	कं	न्हैं	ऽ	या	ऽ
0				3				x				2			
प				प		प	ध								
ग	–	गम	रे	ग	प	नि	नि	सांसां	गरें	सांनि	धनि	सांनि	धप	मग	मरे
नं	ऽ	दऽ	ही	ना	ऽ	च	दि	खाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			
	स	.	स												
सां	सां	ध	प												
ब	लि	ब	लि												
0															

अंतरा

				ध											
प	–	प	–	नि	ध	नि	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां	–
ता	ऽ	री	ऽ	दे	ऽ	दे	ऽ	अ	प	ने	ऽ	क	र	की	ऽ
0				3				x				2			
												स			
सां	रें	गं	मं	रें	सां	रें	सां	ध	नि	सां	–	ध	नि		प
प	र	म	प्री	ऽ	त	उ	प	जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो
0				3				x				2			
			सां								ग				
धनि	सं	सां	ध	नि	प	मग	मरे	रे	गम	प	मग	म	रे	सा	सा
आऽ	ऽ	न	जौ	ऽ	न्त	धुऽ	नऽ	सु	नऽ	ड	रऽ	प	ट	क	त
0				3				x				2			
प		प		प			ध								
ग	–	ग	मरे	ग	प	नि	नि	सां	–	सांसां	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा
मो	ऽ	भु	जऽ	कं	ऽ	ठ	ल	गा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोऽ
0				3				x				2			

सां सां ध प						
ब लि ब लि						
0						

टिप्पणी

आलाप (अल्हैया बिलावल)

बलि बलि जाऊं मधुर सुर गावो

1.	- गरे ग प	ध नि ध -	- प - - -	- - -
	0	3	x 2	

2. सा रे ग रे सा - - नि़ ध़ नि़ ध़ प़ - - - ग़ प़
धऩि सा - - सा रे ग रे ग प - ग प ध नि ध
प ध ग प म - ग - - रे ग प म ग म रे - सा

तान

बलि बलि जाऊं -

1.	- गरे गप धनि	धप मग रेसा ऩिसा
	x	2

बलि-बलि जाऊं मधुर सुर गावो

2.	- गरे गप धनि	सां - - धनि धप	मग रेग पम ग-	- मरे साऩि सा -
	0 3		x	2

5

राग काफी

भूमिका

यह राग काफी ठाठ से उत्पन्न हुआ है। इसी आधार पर, गंधार एवं निषाद स्वर कोमल हैं तथा अन्य स्वर शुद्ध हैं। इसका सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है, जिसके पश्चात् एक ताल में बद्ध एक बंदिश की संपूर्ण स्वरलिपि आलाप तथा तान सहित दी जा रही है। इसी बंदिश के क्रियात्मक प्रदर्शन के लिये साथ में उपलब्ध सी.डी. को सुनें।

राग परिचय

ठाठ – काफी

वादी – पंचम

संवादी – षड्ज

जाति– सम्पूर्ण–सम्पूर्ण

गायन समय - मध्य रात्रि अथवा सायं काल

आरोह	–	सा	रे	ग	म,	प	ध	नि	सां	
अवरोह	–	सां	नि	ध	प	म,	ग	रे,	सा	
पकड़	–	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प।

बंदिश

स्थायी

गुनि गावत काफी राग
खरहरप्रिय मेल जनित
कोमन गति उज्वल पर
सुर पंचम वादी साध

अंतरा

सरल सरूप विपश्चित
मानत सब सुध अविकल
आश्रय गुनि चतुर कहत

टिप्पणी

कोमल गनि उज्वल पर
सुर पंचम वादी साध

काफी-एकताल (मध्य लय)

स्थायी

7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
		म		म							
पध	मग	ग	–	रेसा	रे	ग	–	म	प	–	प
गुऽ	निऽ	गा	ऽ	वऽ	त	का	ऽ	फि	रा	ऽ	ग
0		3		4		x		0		2	
नि	सां					म					
सां	रें	सां	नि	ध	प	ग	–	रे	सा	रे	सा
ख	र	ह	र	प्रि	य	मे	ऽ	ल	ज	नि	त
0		3		4		x		0		2	
नि		म									
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि		ऽ	ज्व	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	
सां											
नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

अंतरा

प											
म	म	म	प	नि	–	सां	नि	सां	–	सां	सां
स	र	ल	स	रू	ऽ	प	वि	प	ऽ	श्चि	त
0		3		4		x		0		2	
नि	सां	रे	गं	रें	सां	रें	सां	रें	नि	सां	सां
मा	ऽ	न	त	स	ब	सु	ध	अ	वि	क	ल
0		3		4		x		0		2	
रे		ध				म					
सां	–	नि	ध	म	प	ग	ग	रे	सा	रे	नि़
आ	ऽ	श्र	य	गु	नि	च	तु	र	क	ह	त
0		3		4		x		0		2	
सा	–	रे	रे	ग	ग	म	–	प	प	ध	ध
को	ऽ	म	ल	ग	नि	ऊ	ऽ	ज्व	ल	प	र
0		3		4		x		0		2	

टिप्पणी

नि	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	–	म	प	–	मप
सु	र	पंऽ	ऽ	च	म	वा	ऽ	दि	सा	ऽ	धऽ
0		3		4		x		0		2	
पध	ध										
गुऽ	नि										
0											

आलाप (काफी)

गुनि गावत

	x		0		2		0		3		4	
1.	सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	–	–	–
	–	प	ग	रे	नि़	सा						
2.	रे	रे	ग	ग	म	म	प	ध	नि	ध	प	म
	ग	रे	नि़	सा	–	–						
3.	म	प	ध	नि	ध	नि	ध	प	म	ग	रे	नि़
	सा	–	–	–	–	–						
4.	ग	म	प	म	प	ध	नि	सां	नि	प	ग	रे
	म	ग	रे	रे	नि़	सा						
5.	म	प	ध	नि	सां	–	–	–	रें	नि	ध	प
	म	ग	रे	–	रे	ग	रे	रे	म	ग	रे	–
	नि	–	नि़	–सा								

तान

गुनि गावत

	x		0		2	
1.	रे ग	रे म	ग रे	सा रे	नि़ सा	रे सा
2.	म ग	म प	ध प	म ग	रे सा	नि़ सा
3.	म प	ध नि	ध प	म ग	रे सा	नि़ सा
4.	म प	ध नि	सां नि	ध प	म ग	रे सा

गुनि गावत

	0		3		4	
5.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	नि ध	प म
	x		0		2	
	ग रे	सा रे	ग म	ग रे	सा रे	नि़ सा
	0		3		4	
6.	सा रे	ग म	प ध	नि सां	सां रें	सां नि
	x		0		2	
	धप	म ग	रे सा	रे ग	म ग	रे सा